सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया
(Process of Social Change)

समाज मनोवैज्ञानिकों ने सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया में निम्नांकित अवस्थाओं को महत्वपूर्ण बतलाया है—

- पिघलाने की अवस्था (Phase of unfreezing)
- परिवर्तन की अवस्था (Phase of changing)
- पुनः ठोस करने की अवस्था (Phase of refreezing)

APPOINTMENTS

पिघलाने की अवस्था — इस अवस्था में समाज के लोगों को पुराने सामाजिक मूल्यों तथा मानकों के हानिकारक प्रभाव के प्रति जागरूक करके उसे त्यागने की उत्सुकता उत्पन्न की जाती है साथ ही नये मूल्यों एवं मानकों की आवश्यकताओं की पहचान लोगों को करायी जाती है ताकि वे अपनी जरूरतों को समझें और उसके प्रति स्वयं आकर्षित हों जैसे— भारतीय परिवेश में राजा राम मोहन राय ने सती प्रथा के कुप्रभावों के प्रति लोगों को जागरूक किया तथा धीरे-धीरे इस प्रथा को बंद कर सामाजिक परिवर्तन लाया गया।

परिवर्तन की अवस्था — इस अवस्था में लोग इस निष्कर्ष पर पहुँच जाते हैं कि उन्हें अपने पुराने मूल्यों एवं मानकों का त्याग कर नये मूल्यों एवं मानकों के अनुरूप व्यवहार करना चाहिए। इस अवस्था में ही सामाजिक परिवर्तन का जन्म होता है। जैसे— जब लोगों में सती प्रथा के कुप्रभावों के प्रति जागरूकता लायी गयी तो वे इसे समाप्त करने का निर्णय लेने लगे।

पुनः ठोस करने की अवस्था — इस अंतिम अवस्था में लोगों द्वारा स्वीकृत मूल्यों एवं मानकों को सुदृढ़ किया जाता है, ताकि लोग उसे अधिक-से-अधिक व्यवहार में लाये एवं उस पर अमल करें। जैसे— सती प्रथा के विरोध में भारत के लोगों में उत्पन्न किये गये नये मूल्य अब पूर्णतः ठोस हो चुके हैं इसी कारण यह सामाजिक बुराई अब समाज में कहीं भी नहीं दिखाई देती है।

NOTES

इस प्रकार उपर्युक्त तीनों अवस्थाओं से होते हुए समाज में महत्वपूर्ण सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया संपन्न की जाती है।

Scanned with CamScanner